एक अभिशप्त मठ

नौ महीने अविराम मै उसकी नाशलीला एक मूक दर्शक की तरह देखा। एक बार भी उसके बचाव के लिए आगे न बढा। दरअसल जो कुछ भी हो रहा था, उसकी सहमति से ही हो रहा था। फ्लोर पर जब भी वो मुझे मिली, किसी न किसी चरसी के साथ। ढंग से चलना तो दूर रहा, उससे खड़ा तक नही हुआ जाता था। फटे पुराने झोले मे सस्ती बीयरें या वाईनें या फिर ठीक ठाक प्रतिशत वाली सस्ती कौर्न, सस्ते डिब्बों के खाने, फटी जीन्स ,गन्दी मुचड़ी जैकेट। उसने नहाना धोना तक बन्द कर रखा था। अपने खूबसूरत बाल भी वो उटपटांग ढंग से काट और रंग रखी थी। उसके दोस्तों का तो और भी बुरा हाल होता था। पता नही!वो इन्हे बर्लिन के किन गन्दे नालों से उठा लाती थी!

अब तो उसने अपने अपार्टमेन्ट से बाहर निकलना भी बन्द कर दिया था। उसका पता बर्लिन के हर चरसी के पास होता था। जिसे देखो, वही इधर उधर से कोई ड्रग पैदा कर के कोर्डुला का मेहमान होता था। उसका स्वास्थ्य भी बेहद गिरता चला जा रहा था। अक्सर रातों मे मै उसका चिखना चिल्लाना सुनता थाःमुझे ड्रग्स चाहिये, तुम्हारा पानी नही। कभीं कभीं तो मुझे लगता था, जैसे बिना सुन्न किए उसके बदन का कोई हिस्सा काटा जा रहा हो।

बर्लिन के शारलोटेनबुर्ग मे फ्राउएनहोफरस्ट्रासे नाम की एक छोटी सी सड़क है, जो काऊअरस्ट्रासे और मार्सस्ट्रासे को जोड़ती है। यहीं पीले रंग का एक मनहूस हॉस्टल है। इस हॉस्टल के अपार्टमेन्टस यूनिवर्सिटी मे पढने वाली उन लड़कियों को मिलता है, जो या तो विवाहिता होती हैं या फिर वगैर शादी किए बच्चे या बच्चों की मॉ होती हैं, या फिर गर्भवती होती हैं। यहॉ के कुछ अपार्टमेन्टस उन लड़कियों को भी मिल जाता है, जो जर्मनी के दूसरे अंचलों से आई होती हैं या बाहर के देशों से बर्लिन मे पढने आती हैं।

इस हॉस्टल का संचालन गोकि स्टूडेन्टेन वेर्क के हॉथों मे है, पर इसे एक कैथोलिक ट्रस्ट ने बनाया था और इसका नाम एक नन के नाम पर रखा थाःओटिलिए फान हानत्सेमन हाऊस। इस चार मंजिले हॉस्टल मे दो ब्लॉक्स और नही भी तो साठ अपार्टमेन्टस रहे होंगे, अटैच्ड लैट्रिन, बाथरूम और कीचन के साथ। इसके दोनो ब्लॉक्स के पहली मंजिल को एक शीशेदार पुल एक हॉल से गुजरता हुआ जोड़ता था। इस हॉल से जुड़ा एक और हॉल ग्राऊन्ड फ्लोर पर भी था। इन हॉलों को किराये पर लेकर यहॉ जन्मदिन या फिर कोई जर्मन उत्सव वगैरह मनाया जाता था। सामने वाले ब्लॉक मे ग्राऊन्ड फ्लोर पर ही एक तीसरा हॉल था, जहॉ सेल्ब्स्ट फेरवाल्टूंग की चुनी पॉच लड़कियॉ सप्ताह मे तीन दिन एक कैन्टिन चलाती थीं। यहॉ पीने पिलाने को सब कुछ मिल जाता था और वो भी बेहद कम कीमत पर, पर खाने के नाम पर यहॉ इन्ही मे से किसी एक के बनाये खाने या पेस्ट्रियॉ मिलते थे। कैन्टिन के अलावे इनके पास पिछले ब्लॉक के वेसमेन्ट मे एक वाश सैलून भी था। कपड़े धोने के लिए हमे इनसे टोकन खरीदने पड़ते थे। थोड़े बहुत पैसे इन्हे स्टूडेन्टेन वेर्क से भी मिलते थे। मुनाफें के एक भाग से इस हॉस्टल के अहाते मे सामूहिक एकाध उत्सव भी मनाये जाते थे।

मै अपने ही फैकल्टी के एक लड़की के अपार्टमेन्ट मे उसके अनुरोध पर रह रहा था। मुझे उसके अपार्टमेन्ट मे आए छ महीने हो चले थे। शुरू के दिनो मे मै डर रहा था कि शायद मेरे वहॉ रहने का विरोध होगा, पर ये मेरा भ्रम था। समय के साथ यहॉ मुझे स्वीकार लिया गया। फिर भी मैने हर सम्बन्ध एक दूरी पर ही रखा था।

कभीं कभीं मुझे लगता था कि इस हॉस्टल के सारे अपार्टमेन्टस अभिशप्त हैं। यहॉ मैने किसी का घर बसते नही देखा, बल्कि बसे बसाये घरों को उजड़ते ही देखा। ये हॉस्टल एक अभिशप्त मठ है, मेरा ये विश्वास दिन व दिन सघन होता जा रहा था।

इन तमाम वर्षो के वाद भी मुझे इस हॉस्टल से तमाम जीवन जोड़ते है, पर विशेष रूप से दो जीवन। एक जीवन जो लगभग तवाह हो चला था और फिर से बस गया और दूसरा बसा बसाया था और बिल्कुल तवाह हो गया। पहले जीवन से कोर्डुला नाम की एक मासूम लड़की जुड़ी है और दूसरे से रेजा नाम का एक कामुक इरानी लड़का।

कोर्डुला ने अपना घर पहली बार छोड़ा था। बर्लिन के टेक्निकल यूनिवर्सिटी मे वो बिजनेस मैनेजमेन्ट पढने आई थी। उसे ठीक मेरे बगल का अपार्टमेन्ट मिला था, जो लिज़ा का था। लिज़ा पोलेन्ड की रहने वाली थी। कहने को तो वो स्टूडेन्ट थी, पर पैसा कमाना उसका मूख्य ध्येय था। उसके मॉ वाप पोलेन्ड से उसके पास अलग अलग रेसों के पिल्ले छोड़ जाते थे, जिन्हे वो बर्लिन मे वेचा करती थी। अफवाह तो ये भी थी कि वो अपने शरीर का भी धन्धा करती थी। उसका पहनावा कोई खास सभ्रान्त तो न था, पर या तो कुछ ज्यादे ही तंग या फिर जरूरत से ज्यादे खुला था। अक्सर वो मेरी घन्टी दवा कर कभीं कॉफी, तो कभीं ब्रेड कभीं चीनी, तो कभीं दूध मॉगने आ धमकती थी। मुझे पता ही न चलता था कि मै अपनी नज़र कितना ऊपर या फिर कितना नीचे ले जाऊँ!जब उसने फ्राउएनहोफर छोड़ा, तो अपने पीछे एक मोटा सा इतिहास ही छोड़ गई ।जैसा उसका कहना था, विदा लेने वो सिर्फ मेरे पास ही आई थीःमै हमेशा के लिए क्योल्न जा रही हूँ। पता नही, बर्लिन कब आऊँगी। फिर भी अगर आई, तो तुमसे मिलने जरूर आऊँगी।

उसका मुझसे गले से लग कर विदा लेना कहीं न कहीं मेरा मन अवश्य छू गया था। दो महीने तक ये अपार्टमेन्ट खाली रहा।

एक दिन जब मै यूनिवर्सिटी से वापस घर लौटा तो देखा कि पूरा फ्लोर फर्निचरों और खाकी पैक्ट कार्टोनों से गॅजा पड़ा है। किसी तरह ॲड़सता ॲड़साता मै अपने अपार्टमेन्ट तक पहुँच पाया। दरवाजा खोल ही रहा था कि लीज़ा के अपार्टमेन्ट से यही कोई बीस इक्कीस वर्ष की लड़की बाहर निकली और माफी मॉगते हुए अपना परिचय दिया। उसके पीछे उसकी मॉ भी खड़ी थी। उन्होने अपना परिचय खुद ही दिया।

पूरे सप्ताह वो बर्लिन मे रहीं। मजदूर लगवा कर उन्होने कोर्डुला के कमरे चमकवाये। स्टूडेन्टेन वेर्क के सारे मनहूस फर्निचर्स, पर्दे, कालीन, गद्दे सब कुछ उन्होने वापस करवा दिये। अगर अपार्टमेन्ट का दरवाजा खुला होता था, तो मै हल्के से अन्दर झॉक लेता था। कोर्डुला का ड्राईन्गरूम, जो फ्लोर से लगा था, उसे देखने के बाद मुझे अपना ड्राईन्गरूम तो एक कवाड़खाना ही लगता था।

एकाध बार ये हॉस्टल के सामने अपनी गाड़ी से भी उतरते दिखे। गाढे नीले रंग की डाईमलर, चमकी चमकाई, जैसे आज ही उसे शो रूम से बाहर निकाला गया हो। कोर्डुला मुझे जब भी फ्लोर या कहीं और दिखी हलो, कैसी हो, के अलावे मैने तीसरा सवाल उससे कभीं न किया। उसके बस यही दो जवाव मुझे झकझोर कर रख देते थे। एक बेहद ही धुला सौन्दर्य उसके पास था। विना मुस्कराये वो कुछ बोलती ही न थी। सपनीली ऑखें ,कन्धे तक बिखरे बाल, एक दूसरे पर चढे मोतियों जैसे दॉत, जब वो बोलती थी तो उसके मुँह से मिसरी बरसते थे। कभीं कभी तो मै उसके तुम कैसे हो! के जवाव मे ही हकलाने लगता था।

बर्लिन मे पहली बार मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे कोर्डुला मुझे खुल्लम खुल्ला चुनौती दे रही है। मेरी परेशानी ये थी कि अगर मै एक कदम भी आगे

बढाता था, तो मेरा अपना सब कुछ ही पीछे छूट जाता था। वो तो मेरी जड़ ही काटने पर तुल गई थी, जो बनारस के भोजापुर नाम के गॉव मे पता नही कहॉ तक! शायद पाताल तक गई हुई थी। मै एक अति गहरे ऊहापोह से जा उलझता था। मेरा मन अहर्निश कोर्डुला के ही आसपास भटकता रहता था। मै अक्सर उसी मे खो जाया करता था। मै जब भी उसकी तरफ एक कदम बढाने की सोचता था, हजारों बेड़ियॉ मेरे पैरों मे पड़ जाती थीं। उसे याद क्या किया कि, हजारों चेहरों मे वो गडमड हो जाती थी। अपनी भूमि, अपनी संस्कृति, अपने सगे सम्बन्धी, सभी मुझे अपने से छूटते नज़र आते थे।

एक दिन मुझे अपने दरवाजे पर सटी एक पर्ची मिलीःविकएन्ड मे तो तुम काम पर नही जाते होगे!अगर शनिवार को तुम्हारे पास समय है, तो दोपहर का खाना मेरे संग खाओगे!कल काम पर जाने से पहले मुझे बता दोगे कि तुम आओगे या नही!

नीचे उसका इनिशियल थाःसी।

मेरे सिमेस्टर की छुट्टियॉ चल रही थीं, और मुझे एक कॉफी के फर्म मे तीन सप्ताह का काम मिला हुआ था। दोपहर के दो बजे काम पर पहुँचना होता था। घर वापस आते आते रात के ग्यारह बज जाते थे। एक जिज्ञासा तो मेरे मन मे थी ही, ये जानने की, कि एक कुँवारी लड़की अपने अपार्ट मेन्ट मे किस तरह से रहती है!क्या करती है वो अपने अपार्टमेन्ट मे!क्या पहनती है!, क्या ओढती है! कौन सी किताबें पढती है!, किस तरह के गाने सुनती है! कौन सा रंग उसका मनपसन्द है!किस तरह के गमले वहॉ होंगे!वो कैसे उठती और बैठती है!

दूसरे दिन काम पर जाने से पहले एक स्लिप मै उसके दरवाजे पर सटाने ही वाला था कि उसे मेरी आहट मिल गई। पलक झपकते दरवाजा खुल गया। एकबारगी तो मै सकपका ही गया

ःतुमने आने का समय नही बताया था!

ःजब भी तुम्हारी मर्जी हो। मै खुश हूँ कि तुम आओगे।

ःकुछ साथ लाना चाहता था। क्या लाऊँ तुम्हारे लिए!किस तरह की वाईन पीती हो!

ःतुम्हे कुछ नही लाना है। बस तुम्हे आना है, बड़े ही अधिकार भाव से उसने कहा।

शनिवार को नहा धोकर मै शहर चला गया। वहॉ मैने सूर्यमुखी का एक बड़ा सा फूल और एक मध्यम दर्जे का वाईन खरीदा। घर आ कर उसे रैप किया। पता नहीं क्यो अकस्मात मॉ याद आई। क्या होगा उनके अपने सपनों का!वो तो खाट ही पकड़ लेंगी।

मै स्वयम को अच्छी तरह जानता था। इस दिशा मे मेरे कदम सिर्फ बिस्तर तक नही, सीधे शादी तक ही जाते थे। उन्मुक्तताओं के बावजूद इस देश मे प्यार भी था, ऑसू भी, आशा भी, निराशा भी। पर जिस हिंसाब से कोर्डूला के नाम पर मेरा दिल धड़कता था, वो मेरे वश का न था।

उसे लिज़ा के अपार्टमेन्ट मे आना ही न था और मुझे फ्राउएनहोफर मे नही। मै अपने आप को बैठा कोसे जा रहा था।

मै इन्ही बातों मे खोया हुआ था कि दरवाजे पर एक हल्की सी दस्तक पड़ी। की होल से देखा, दरवाजे पर कोर्डुला खड़ी थी। मै भाग कर रसोईघर मे गया और सूर्यमुखी का फूल उठा लाया। दरवाजा खोल कर जब मैने उसे फूल और वाईन पकड़ाया तो वो बड़ी अदा से अपने टखनो पर झुकी। इस तरह का धन्यवाद मैने इन्ही के एकाध ऐतिहासिक फिल्मों मे देखा था।

सफेद लम्बे स्कर्ट और सफेद बिना बॉह की ब्लाउज मे वो किसी अप्सरा से कम न लग रही थी। ब्लाउज पर बॉयें वक्ष के ऊपर रेशमी धागों से एक टेंढा मेढा सी कढा था। ये टेंढा मेढा सी मैने उसके अपार्टमेन्ट मे कई जगहों पर देखा, चादर, मेजपोशों, तौलियों, तकियागिलाफों और रजाई कवर्स पर।

उसके अपार्टमेन्ट को देख कर तो मै हक्का बक्का ही रह गया। मै उसके सोने के कमरे के अन्दर तो न गया, पर वहॉ भी सिर्फ महागोनी के फर्नि चर्स थे, जो जर्मनी की सबसे मॅहगी लकड़ी मानी जाती है। क्या कुछ नही था, उसके पास!

उसके अपार्टमेन्टस की चार चीजें मुझे बेहद अच्छी लगीं। सफेद रंग का प्रभुत्व, फाईकस का छत को छूता पौधा, खिड़कियों के तख्त पर रखे बोनजाईस और हर जगह कढा ये टेढा मेढा सी, जो उसके नाम का पहला अक्षर था। मुझे बैठने को वो कई बार कह चुकी थी, पर मै अभीं तक घूम घूम कर उसकी एक एक चीजें देखे जा रहा था। इस बीच वो एक बीयर खोल कर खाने की मेज पर एक ग्लास मे ढाल गई थी और खुद एक सफेद एप्रन बॉधे रसोई मे अपने खाने गर्म किये जा रही थी। खाने की मेज उसके ड्राईन्गरूम मे ही थी, जो धीरे धीरे भरती जा रही थी। इस बीच वो सिर्फ एक बार मुझसे ये पूछने आई कि कहीं मै प्योर वेजिटेरियन तो नही हूँ।

मै उसकी एक एक चीज पर नजर डाल चुका था। एक कुर्सी खीच कर मै खाने की मेज पर बैठा ही था कि वो एक चॉदी के छल्ले से चुनट किया सफेद तौलिया निकाल कर मेरे घुटनों पर रख दी। इसके भी एक कोने पर सी कढा था। अब मुझे उससे पूछना ही पड़ाःये सी तुमने काढे हैं!

ःनही, मॉ ने।

ःये इस कदर टेढा मेढा क्यों है!

ःजब मैने अपनी पहली क्लास मे लिखना सीखा, तो सबसे पहले मैने अपना नाम लिखा। मेरा सी कुछ ज्यादे ही बड़ा था, एक क्रिसेन्ट की तरह, जो मॉ को बड़ा पसन्द आया। ये मेरी जिन्दगी का पहला अक्षर है।

ये खाना टिपिकल जर्मन था, पर खाया जा सकता था। मिर्च मसाले के नाम पर नमक और काली मिर्च या फिर इनकी अपनी बूटियॉ, जो हमारे देश मे नही पाई जाती हैं। उसकी बनाई पूडिन्ग और पेस्ट्रियॉ तो वाकई बेहद अच्छी थीं।

खाने के दौरान मैने उससे पूछाःतुमने कभीं इन्डियन खाने भी खाये हैं!

ःकई बार। हानोवर मे हमारे घर के पास ही एक इन्डियन रेस्त्रॉ है, महाराजा। वहॉ मै मॉ के साथ अक्सर जाती थी।

ःवहॉ का कौन सा खाना तुम्हे सबसे अच्छा लगता था!

ःचिकन करी और पान।

पान सुन कर मेरा दिमाग चकरायाःपान या नॉन!

ःशायद नॉन। नॉन भी तो ब्रेड की तरह ही होता है न!तुम ऐसी चीजें बना लेते हो!

ःचिकन करी या, परन्तु नॉन मैने कभीं नही बनाया है।

ये शनिवार एक तरह से उसके प्रश्नो की शनिवार थी। वो मेरे बारे मे ही पूछती रही। मै दस बजे रात तक उसे अपने दीन दुनिया की सुनाता रहा, पर मुझे उसके बारे मे भी काफी कुछ पता लगा।

वो पैदा तो हमवुर्ग मे हुई थी. पर उसकी पढाई लिखाई हानओवर मे हुई थी। उसके पिता इन्टरनिस्ट थे और उनकी अपनी निजी प्रेक्टिस थी। माँ पेशे से टी वी जर्नलिस्ट थी। जब वो दूसरी क्लास मे थी तो एक पार्टी मे उसके पापा कुछ ज्यादे ही पी रखे थे। दूसरे मेहमानो के सामने वो उसकी माँ का अपमान तो किए ही. उनके मुँह से एक सच भी निकल गया। तीन वर्षो से उनका अफेयर एक लेडी डॉक्टर से चल रहा था. जो उसकी माँ की अच्छी सहेलियों मे एक थी।

दूसरे ही दिन उसकी माँ अपने और उसके जरूरत के कपड़े बाँधी और हानोवर आ गई। साल भी न गुजरा था कि उसकी माँ को तलाक की कागजें मिली। विना किसी शर्त्त के उन्होने उन पर अपने साईन करके उन्हे वापस भेज दिया।

ःमाँ का पापा से तलाक हो गया और पापा ने दूसरी शादी भी कर ली। अक्सर मै पापा को याद करती थी। दूसरे बच्चों को स्कूल से लेने जब तब उनके पापा भी आते थे. सिर्फ मेरे नही। हानोवर मे उनका फोन आता थाःकोर्डुला कैसी है!

माँ बिना कुछ बोले मुझे फोन पकड़ा देती थी और मै उन्हे अपनी सारी कहानियाँ सुना डालती थी। मेरे जन्मदिन पर सबसे पहले पापा का प्रेजेन्ट पोस्ट से मेरे पास आता था। उन्हे मै अपनी जितनी भी विशें गिनवाती थी. वो सब कुछ भेज देते थे। उनका भेजा पैकेट माँ तक से न उठाया जाता था।

मेरे पापा का दूसरा विवाह ज्यादे लम्वा न टिक पाया। अपनी पत्नी के नाज़ नखरे उठाने मे उन्होने अपना बेहद पैसा जाया किया। दूर दूर देशों की यात्रायें. मँहगे से मँहगे होटल्स. एक से एक कपड़े और गहने। यहाँ तक कि उनकी जमी जमाई प्रेक्टिस तक लड़खड़ाने को आई। उन्हे एक बार दिल का भी दौरा पड़ा। पाँच वर्षो के अन्दर ही उन्हे पता चल गया कि वो एक बड़ी गलती कर चुके हैं। उन्होने अपनी दूसरी पत्नी से भी तलाक़ ले ली।

समय के साथ वो सब कुछ सम्हाल लिए. पर मेरी माँ को दुवारा न पा सके। उन्हे वो फिर से अपने साथ रखना चाहते थे. पर माँ तैयार न हुई।

ःऔर तुम!तुम्हे उनकी याद नही आती!

ःबहुत आती है। एक बार माँ को मना कर मैने उनकी प्रेक्टिस मे तीन सप्ताह का प्रेक्टिकल भी किया। मै उन्ही के संग रही। मेरे पापा बिल्कुल टूट चुके थे। घर पर घंटों बैठे मेरी और माँ की तश्वीर निहारा करते थे। मेरा ऐसा कोई भी सामान वो फेंके नही थे। यहाँ तक कि मेरे रास्तों पर पाये गए कचरे तक नही। जब मै पहली बार अपने कमरे मे गई तो एकबारगी मेरी उम्र दस वर्ष घट गई। मै फिर से एक छ वर्ष की लड़की थी। जब मै वापस हानोवर आई. तो माँ को बिल्कुल टूटा पाया। सोच के आई थी. कि मै माँ को मनाने की कोशिश करूँगी। सिर्फ एक बार मैने माँ से पूछाःमाँ तुम पापा को माफ नही कर सकती!पता है तुम्हे. उनका क्या जवाब था!ःकोर्डुला. अब तुम अट्ठारह वर्ष की हो चली हो। मै तुम्हारे किसी फैसले के आड़े न आऊँगी। तुम्हे मै हमवुर्ग जाने से न रोकूँगी और न तो हानोवर आने से कभीं मना करूँगी। निर्णय तुम्हे लेना है।

यहाँ पर बात! टूटने और जुटने की न थी। प्रश्न था. दोष या निर्दोष का। मेरी माँ बिल्कुल निर्दोष थीं। मैने पापा से अपने आप को दूर कर लिया।

इस शाम के बाद कोर्डुला मेरे कुछ ज्यादे ही करीब आ गई। घर पर. काम पर वो याद की शक्ल मे एक साये की तरह मेरे आगे पीछे चिपटी रहती थी।

जैसे बहते पानी के सामने दीवार खड़ी. ऊँची या मजवूत करने पर उसकी जिद़ दिन व दिन और जिद़ी होती चली जाती है. वही हाल मेरी भावनाओं का भी था। क्या क्या नही मैने इनके सामने खड़े किए. पर एक वाढ को आना ही आना था।

मेरे पास एक सप्ताह का काम बचा था. फिर मेरे पास छ सप्ताह की छुट्टी थी। बर्लिन का शायद ही ऐसा कोना बचा था. जहाँ हम साथ साथ न गए हों। पता नही मैने उसके साथ कितनी फिल्में देंखी. कितने कन्सेर्टो. थियेटरों और डिस्को मे गया। किसी किसी विकएन्ड मे तो हमने सुबह तक विडियो पर फिल्में देंखी। मै विना बुलाये उसके अपार्टमेन्ट मे कभीं न गया. पर उसका जब भी मन होता था. मेरे पास आ धमकती थी। यूनिवर्सिटी मे भी हर ब्रेक मे वो मेरे पास आ जाती थी। दोपहर का खाना भी हम साथ ही खाते थे।

जो भी थोड़ा बहुत समय मेरे पास होता था. यही सोचने मे गुजर जाता था कि मै इस सम्बन्ध को कहाँ तक बढाऊँ!शादी व्याह की कल्पना से ही मै सिहर जाता था। दूसरा विकल्प मेरे पास नही था। मै शनै शनै इसी दिशा मे बढने लगा था। दूसरे शब्दों मे बढने पर मजवूर हो गया था।

अक्सर कोर्डुला की आँखें पनीली हो जाती थी। कभीं कभीं तो वो मिनटों अपनी नजर मुझ पर गाड़ देती थी और अपनी पलकें तक न झपकाती थी। मै ऐसे आमंत्रणो की भाषायें जानता था. फिर भी अन्जान बना रहता था। मुझसे वो सैकड़ों बार उगलवा चुकी थी कि मै उससे प्यार करता हूँ फिर भी ऐसे क्षणों के गुजरने के बाद बड़ी मायूसी से मेरे प्यार के सामने एक प्रश्नचिन्ह लगा कर वो अपने अपार्टमेन्ट मे चली जाती थी। ऐसे क्षण कभीं कभार से प्रायः होते चले जा रहे थे. फिर भी हमारा सम्बन्ध इन बातों से अप्रभावित था। अब तक कोर्डुला के आमंत्रण मौन थे। उनमे कोई उन्मुक्तता नही थी। सिर्फ एक बार उसका आमंत्रण उन्मुक्त हुआ. फिर मुझे झल्लाना पड़ गयाःशरीरों मे जानने समझने के लिए कुछ नही रखा है। जानने समझने के लिए मन है। वही रिश्तों को बाँधे रहता है। मै तुम्हारी तरह जर्मन नही हूँ। मै तुम पर अपना कुछ लादना नही चाहता और यही मै तुमसे भी चाहता हूँ। एक बिस्तर से तुम्हारे देश मे सम्बन्धों की शुरूआत होती होगी. मेरे देश मे नही। अगर तुममे धैर्य नही है. तो मै तुम्हारी कोई मदद नही कर सकता। बेशरमी की भी एक हद होती है।

वो चुपचाप उठी और अपने अपार्टमेन्ट मे चली गई।

मुझे नही पता था कि ये हमारे सम्बन्ध का अन्त है। एक ही झटके मे उसने अपने आप को अन्जान बना लिया। फलोर पर भी वो विना हलो कहे आगे वढ जाती थी। सप्ताह भर मै भी चुप रहा फिर एक दिन बेशर्म बन कर उसके दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। ये वही कोर्डुला थी. जो मेरी आहटों पर आँखे बिछाये रहती थी. दरवाजे की जंजीर तक न सरकाई। बगैर हलो के थोड़ा सा दरवाजा खोल कर खड़ी हो गई। मै उससे माफी माँगने नही गया था। उससे सिर्फ ये पूछने गया था कि मेरी कौन सी बात उसे इस कदर आहत कर गई थी कि वो मुझसे सम्बन्ध नही रखना चाहती। उसकी आँखों मे अपरिचय ही अपरिचय था। बिना कुछ कहे मै वापस आ गया।

उसे चाहने तो मै उसी दिन से लगा था जब मैने उसे पहली बार देखा था. पर प्यार मै उस दिन से करने लगा. जब वो अपने आप को अन्जान बना ली। फ्लोर की हर आहट पर मै की होल के सामने खड़ा हो जाता था। बिना उसे देखे बिस्तर पर न जाने की मैने कसम खा रखी थी। एक कसम उसने भी खा रखी थी. वगैर मेरे दरवाजे की ओर देखे अपने अपार्टमेन्ट मे जाने की। मेरे कान उसकी मधुर आवाज सुनने को तरस रहे थे।

कभीं कभीं तो उसे घर वापस आते रात के एक दो तक बज जाते थे। विकएन्ड मे तो वो सुबह ही घर वापस आती थी। मै जगा उसके घर आने का इन्तजार करता रहता था।

मेरे अपने मन के अन्दर एक नीरवता सी आ बसी थी।मेरा मन कहता था कि बहुत ही जल्दी मेरे जीवन मे बड़ी ही द्रुत गति से एक तूफान को आना है।

एक दिन वो पता नही कहॉ से एक चरसी को थामे अपने अपार्टमेन्ट मे लाई।ठीक इसी दिन मुझे अपने अपार्टमेन्ट से बाहर निकल कर उसे रोक लेना था.जो मैने नही किया।जो कुछ उसे गॅवाना था.गॅवाई ही फिर शुरू हुआ उसके बर्बादियों का सफर।इसी दिन उसने मुझे भी खो दिया।कई दिन लगे मुझे अपने को समेटने मे।मै कोर्डुला से नफरत करना तो नही शुरू किया.पर मेरे मन पटल पर उसकी जो छवि अंकित थी.वो लगभग धूमिल हो चली थी।शतरंज की पहली गोटी मैने अपने हॉथ मे ली भी न थी और मै अपनी बाजी हार चुका था।

उसने यूनिवर्सिटी भी जाना बन्द कर दिया।दिन रात उसके अपार्टमेन्ट मे फूल वाल्यूम पर गाने बजते होते थे।हर दिन उसके पास एक नया चरसी होता था।न जाने कितने दिन हो गए थे.मुझे उसे देखे हुए।

हमारे होफ मे वेल्टाने नाम का एक उत्सव मनाया जाना था।होफ के बीचोबीच टूटे मेज कुर्सियों का अम्बार लगता जा रहा था.जिसमे आने वाले शुक्रवार शाम के आठ बजे आग दी जाने वाली थी।कोई एक बैंड पार्टी भी आने वाली थी।कईयों से मुझे भी वहॉ आने का निमंत्रण मिला हुआ था।मन बहलाने के ख्याल से मै भी वहॉ गया।

कैन्टिन मे तिल तक रखने की जगह न थी।फ्राउएनहोफर मे रहने वाली लड़कियॉ पहचानी नही जा सकती थी।सबो ने डाईनों का मेकअप कर रखा था।आज के खाने मुफ्त के थे।सब के सब खानो पर टूटे पड़े थे।मै एक बीयर खरीद कर वापस होफ मे आ गया।लकड़ियों के अम्बार से जरा हट कर गोलाई मे तकरीबन सैकड़ो कुर्सियॉ लगी हुई थी।मै वहीं जाके बैठ गया।

पौने आठ बजे सारी भींड़ कैन्टिन से भरभरा कर बाहर निकली।जिसे जो भी कुर्सी मिली.वहीं बैठ गया।

अन्धेरा हो चला था।ठीक आठ बजे रेजा की अगवाई मे दूसरे इरानी लड़कों ने लकड़ियों के ढेर मे आग दी।देखते ही देखते आग की लपटें आसमान छूने लगीं।हुर्रा हुर्रा के शोर से पूरा होफ गूँज रहा था।जब ये कोलाहल थोड़ा कम हुआ.तो एक लड़की अपना गिटार थामे सामने आई और उसने बिटल्स का एक गाना गया।इस गाने के दौरान ही मेरी नजर कोर्डुला पर पड़ी।एक हॉथ से बीयर थामे वो एक इरानी के कन्धे पर अपना सर रखे पूरी तन्मयता से ये गाना सुने जा रही थी।एक बार तो मेरा जी धक करके रह गया।बड़े उटपटांग ढंग से उसने अपने बाल काट रखे थे और उसे नीले रंग से रंग रखा था।अपने पहनावे मे वो दूर से भी आधे से ज्यादे नंगी दिख रही थी।उसके कमर से लिपटा उस इरानी का बालदार हॉथ तो मुझे किसी जहरीले नाग से कम न लग रहा था।

एक घन्टा भी न गुजरा था कि वो इरानी उसे लगभग गोद मे लिए उठा।मै जहॉ बैठा था.वहॉ से कोर्डुला का अपार्टमेन्ट साफ साफ नज़र आता था।पर्दे सरकाये हुए थे.बत्तियॉ बुझी हुई थीं।अचानक उस इरानी के पीछे रेजा के अलावे और दो इरानी हो लिए।थोड़ी ही देर मे कोर्डुला के अपार्टमेन्ट की बत्तियॉ जली और वहॉ के पर्दे खींच दिये गए।कड़वाहट से मेरा मन भर आया।

काश कोर्डुला की मॉ जर्मनी मे होतीं या फिर उसके पिता का मेरे पास टेलीफोन नम्बर होता।सबसे ज्यादे गुस्सा तो मुझे अपने आप पर ही आ रहा था और मन ही मन मै अपने को ही गाली दिये जा रहा था।मेरा मन होफ के प्रोग्रामों मे न लगा।बारह बज चुके थे।मै उठा और अपने अपार्ट मेन्ट की तरफ बढा।

कोर्डुला के अपार्टमेन्ट का दरवाजा हल्का सा खुला था।फ्लोर पर से ही मैने आवाज दीःअन्दर कोई है.अन्दर कोई है!

अन्दर से कोई आवाज न आई।मै हल्के से दरवाजा खोल कर अपार्टमेन्ट के अन्दर गया.जहॉ का दृश्य आज तक एक दुःस्वप्न बन कर मुझे आए दिन रातों मे डराता है।कोर्डुला अपने बिस्तर पर बिल्कुल नंगी अचेत लेटी पड़ी थी।उसकी रजाई जमीन पर लसड़ी पड़ी थी।सारी आलमारियॉ खुली पड़ी थी।उनके आधे से ज्यादे सामान फर्श पर बिखरे पड़े थे।टेलीविजन.विडियो.म्यूजिक सेट सब कुछ ऑन था।सारे बोनजाई स सूख कर कॉटे हो चले थे।फाईकस मे एक भी हरा पत्ता शेष न बचा था।जिधर भी नज़र जाती थी.सस्ते बीयर और वाईन की खाली बोतलें लुढकी नज़र आती थी।कीचन मे कूड़े की बाल्टी सस्ते खानों के कैन्स से भरी पड़ी थी।वाश बेसन मे गन्दे बर्त्तनो का अम्बार लगा हुआ था।टवायलेट पोट रंग बिरंगे कन्डोमो से भरा पड़ा था।दीवारों और छतों पर पता नही किन किन हॉथों के काले छाप बने हुए थे।फ्रीज बिल्कुल खाली पड़ी थी।अजीब सी सड़ांध वहॉ थी।मै सोच भी नही सकता था कि कोर्डुला इस कदर अपने जीवन से खिलवाड़ कर सकती है।

मै वापस उसके सोने के कमरे मे आया।वो अपने दोनो बॉहों पर सो रही थी।उसके सिरहाने एक तकिया रखकर धीरे से मैने उसे पलटा और उस पर रजाई डालने ही वाला था कि उसकी पलकें खुलीं और एक झटके से उसने मेरी बॉई कलाई पूरे मजबूती से थाम लीःप्रमोद! मुझे बड़े जोरों की प्यास लगी है।मेरे लिए एक ग्लास पानी ला सकोगे!

पल भर मे ही मेरे दोनो गाल ऑसुओं मे नहा गए।

गर्दन तक उसे रजाई से ढंक तोप कर मै अपने अपार्टमेन्ट से उसके लिए एक बोतल ऑरेन्ज जूस और एक साफ ग्लास लिए उसके पास आया।जूस से भरा पूरा ग्लास वो एक ही सॉस मे पी गई।मैने ग्लास फिर दुबारा भरा.फिर भरा और तब तक भरता रहा.जब तक कि बोतल खाली न हो गई।

मेरे ऑसू रूकने का नाम ही न ले रहे थे।फिर उसकी पलकें मूँदने लगी।मै सारी बत्तियॉ बुझा कर उसके अपार्टमेन्ट का दरवाजा खींच कर बन्द कर दिया।

मै अपने अपार्टमेन्ट मे वापस चला आया।न जाने क्यों पहली बार मुझे अपने जीवन मे ऐसा लगा कि जब तक मन साफ है.तन के दाग कोई खास अर्थ नही रखते।उन्हे धोया जा सकता है।एक दुषित मन और एक दुषित तन को एक दूसरे से अलग कर के सुबह तक मै उन्हे अलग अलग आयामों से देखता रहा।हमारी संस्कृति और यूरोप की संस्कृति मे यहीं एक मूलभूत अन्तर है।मन एक मन है।उसका बॅटना और भटकना अदृश्य है.पर वो भी बॅटता है और भटकता है।बिना किसी एक अतीत और इतिहास के यहॉ शायद ही कोई परिवार है.पर वहॉ बॅटा तन है.बॅटा मन नही है।

न जाने कितने महीने के बाद किसी को मेरी याद आई।मेरे दरवाजे पर एक हल्की सी दस्तक पड़ी।की होल से बाहर झॉका.सहसा विश्वास न हुआ।दरवाजे पर कोर्डुला खड़ी थी।झट से मैने दरवाजा खोला।

उसकी बॉई हॉथ पर एक पलस्तर चढा था.जिसे वो अपने कन्धे पर डाले जीन्स के एक जैकेट से ढ़ॅके हुए थी।इससे पहले कि मै उससे कुछ पूछता.वही बताने लग पड़ीःसीढियों पर गिर पड़ी थी।मॉ नीचे मेरा इन्तजार कर रही हैं।मै हानोवर जा रही हूँ।किसी एक खास क्लिनिक मे मेरा

इलाज होना है।स्वस्थ होते ही मै बर्लिन वापस आऊॅगी।फ्राउएनहोफर छोड़ने के बाद सिर्फ एक बार फोन करके अपना नया पता मॉ को दे देना।कहॉ कहॉ ढूढूॅगी.मै तुम्हे बर्लिन मे!.कह कर वो फूट फूट कर रोने लग पड़ी।अब मुझसे न रहा गया।बढ कर उसे गले से लगा लिया।चलने से पहले वो अपने हानोवर का पता और टेलीफोन नम्बर मेरी कमीज की ऊपरी जेब मे घूसेड़ गई।
कोर्डुला अपनी मॉ के साथ हानोवर वापस चली गई।बेटीना के वापस लौटने के बाद मुझे भी फ्राउएनहोफर छोड़ना पड़ा।
मै बर्लिन के एक उपेक्षित इलाके मे एक मामूली सा एक कमरे का मकान लेकर रहने लगा।मै अपना नया पता बेटीना को भी न दिया और न हानोवर ही फोन किया।ऐसा भी न था कि कोर्डुला की मुझे याद न आती हो।अक्सर मै अपना मन टटोलता था।वहॉ प्यार भी था.सहानुभूति भी.डर मुझे सिर्फ एक बात का था कि मै उसके नौ महीनों की तबाहियों को हमेशा के लिए न भूला सकूॅगा।कहना बड़ा सरल होता है।कुछ करके दिखाना उतना ही कठीन होता है।
मुझे फ्राउएनहोफर की जब भी याद आती थी.विशेषकर मुझे याद आता था.वहॉ का विश्रृंखलित जीवन।बिना किसी अपवाद के वहॉ की सभी लड़कियों को एक ठोस भविष्य चाहिये था।जो दो चार बसे बसाये घर थे.वहॉ भी कलह ही कलह था।हर अपार्टमेन्ट मे उस दिवंगत नन ने अपना श्राप बरपा रखा था।वहॉ सप्ताह मे तीन दिन चलने वाली कैन्टिन खुलते ही नकली दूल्हों से खचाखच भर जाती थी।इनमे ज्यादेतर तलाकसुदा या फिर इरानी लफन्गे होते थे।सज धज के वहॉ लड़कियॉ आती थीं और ऑखो मे ऑखें डाल कर अपने प्रेमियों के आश्वासन सुन कर द्रवित होती रहती थी।गर्वित अपने प्रेमियों का हॉथ थामे अपने अपार्टमेन्टों मे ले जाती थीं।ढाई साल तक मै ये सारे खेल देखता रहा.पर मुझे एक बार भी ये सुनने को न मिला कि फलाने की फलाने से शादी या सगाई हो गई है।लुच्चे इनके बदन के सारे तिल और मस्से गिन कर सरक लेते थे।
फ्राउएनहोफर के सामने वाले ब्लॉक मे कभीं एक रेजा नाम का इरानी लड़का रह चुका था।वो एक हाईके नाम की जर्मन लड़की से शादीसुदा और एक बेटे का बाप भी था।बाद मे इन्हे मार्शस्ट्रासे पर एक दो कमरे का मकान मिल गया।हाईके किसी सिविल सर्विस मे थी और रेजा पढाई के नाम पर गुलछर्रे उड़ाता था।उसी के जरिये उसके इरानी दोस्त फ्राउएनहोफर मे आते थे.जहॉ उनकी चॉदी ही चॉदी थी।
यूनिवर्सिटी मे जब भी बेटीना मिलती थी.फ्राउएनहोफर आने को कहती थी।मेरे पास हमेशा एक ही जबाब होता थाःतुम्हारे अभिशप्त क्लोस्टर से मै बेदाग बाहर निकल आया.ये क्या कम है।तुम्हे भी मै एक ही सलाह देता हूॅ.कहीं कोई मकान ले कर तुम भी सरक लो।ये इरानी अपने कुरान की कसम उठा कर तुम्हे भी नही छोड़ेंगे।
फ्राउएनहोफर मै दुबारा नही गया।यूरोप की व्यस्ततायें भी कुछ अजीब ही तरह की होती है।यहॉ घड़ियों के कॉटे चलते नही.दौड़ते हैं।कैलेन्डर के पन्ने फड़फड़ाकर बदलते हैं।
अचानक एक दिन एक मेट्रो के डिब्बे मे मुझे कोर्डुला मेरी ओर आती दिखी।मुझे लगा.जैसे मै कोई सपना देख रहा होऊॅ।ओरिजनल कोर्डुला.पैन्सल हिल के जूते.सफेद रंग की जीन्स.सफेद ब्लाउज.गर्दन तक बढे बाल.कानो मे दो छोटी छोटी बालियॉ.कन्धे से लटकता एक भारी भरकम चमड़े का थैला।चेहरे पर वही मासूमियत.वही ताजापन।मुझे अपनी ऑखों पर एकबारगी विश्वास न हुआ।मै मंत्रमुग्ध उसे देखता रहा।वो मेरे बिल्कुल पास आ गई थी।उसके गाल थर्राये जा रहे थे।देखते ही देखते उसकी ऑखे बहने लगी।उसे साथ ले कर मै योर्कस्ट्रासे पर उतर गया।मौन उसी ने तोड़ाःमै सपने मे भी नही सोची थी कि तुम मिलोगे।कैसे हो!
ःमै तो ठीक ठाक ही हूॅ।तुम कैसी हो!बर्लिन वापस कब आई!
ःएक वर्ष से ऊपर होने को आये।
ःकहॉ रह रही हो!
ःसिमेन्सडॉम मे।
ःकोई मकान किराये पर ले रखा है।
ःनही! रोबर्ट के संग रहती हूॅ।
ःकौन है ये!
ःमेरा मंगेतर है।हानोवर का ही रहने वाला है।सिमेन्स मे कमप्यूटर इंजीनियर है।
ःशादी कब कर रही हो!
ःअच्छा हुआ कि तुम मिल गये।इसी शनिवार को हमारी शादी है।मै जानती हूॅ कि तुम मेरे बेस्ट मैन नही बनोगे.पर अगर पार्टी मे आते.तो मुझे बड़ी खुशी होती।
ःकहॉ होने जा रही है ये पार्टी!
ःफ्राउएनहोफर मे।
मुझे चौंकना पड़ाःफ्राउएनहोफर से अच्छी जगह तुम्हे बर्लिन मे कोई दूसरी नही मिली!
ःतुम्ही तो कहा करते थे कि फ्राउएनहोफर एक अभिशप्त क्लोस्टर है।यहॉ न कभीं कोई बारात आएगी और न यहॉ से जायेगी।एक बार ही सही.कम से कम हमारे जरिये वहॉ की मनहूसियत टूट जाय तो क्या बुरा है!
ःकितने बजे से पार्टी शुरू हो रही है!
ःग्यारह बजे से।हम स्टान्डेसआम्ट से सीधे वहॉ आयेंगे।
ःठीक है कोर्डुला।अगर तुम्हे मेरे आने से खुशी होगी.तो मै आऊॅगा।
उस दिन मुझसे यूनिवर्सिटी न जाया गया।कोर्डुला को मेट्रो मे चढा कर मै यूॅ हीं सड़को पर आ गया और निरूद्देश्य यहॉ वहॉ भटकता रहा।कोर्डुला को मैने सिर्फ एक कारण से खोयाःशादी से पहले मै उससे कोई सम्बन्ध नही चाहता था।ये मुझे मिली शिक्षा थी।कुछ पाने के लिए हर व्यक्ति को अपना कुछ न कुछ खोना पड़ता है.पर मै अपने संस्कार का एक अल्पांश भी न उन दिनो खोने को तैयार था और न आज खोने को तैयार हूॅ।ये मांग मेरे सामने किसी को रखनी ही नही चाहिये।
मै जब शनिवार को फ्राउएनहोफरस्ट्रासे पर आया तो वहॉ का दृश्य देख कर अचम्भित रह गया।सड़क के दोनो तरफ वहॉ की लड़कियॉ.बच्चियॉ और बच्चे कतार बना कर सजे धजे खड़े थे।सभी के हॉथों मे गुलाब के फूल थे और सबकी बॉई मुट्ठियॉ बन्द थीं।सबकी ऑखें काऊअरस्ट्रासे

की ओर टिकी थीं। मै उनकी उद्विग्नता देख रहा था। जो दो चार लड़कियॉ मुझे जानती थी, उनके पास भी मुझसे हाल चाल पूछने का समय न था।
फ्राउएनहोफर के मेन गेट के सामने अभीं मै खड़ा ही हुआ था कि काऊअरस्ट्रासे से एक सजी सजाई डाईमलर हॉर्न बजाती फ्राउएनहोफर की ओर मुड़ी। उसके एन्टिने से एक सफेद पताका बँधा हुआ था। इस गाड़ी के पीछे और तीन गाड़ियॉ थीं। उनके भी हॉर्न बज रहे थे। गाड़ियों पर गुलाब फेंके जा रहे थे। पहली गाड़ी मे कोर्डुला अपने पति रोबर्ट के साथ पिछली सीट पर बैठी थी। सभी गाड़ियों के शीशे गिरे हुए थे। एक तरफ कोर्डुला और दूसरी तरफ रोबर्ट गाड़ी से अपना आधा सर बाहर निकाले लोगों के अभिवादन और शुभकामनायें स्वीकारे जा रहे थे। पन्द्रह मिनट तक फ्राउएनहोफर गाड़ियों के हॉर्न और लोगों की हुर्रा हुर्रा के समवेत कोलाहल मे नहाता रहा।
गाड़ी से सबसे पहले कोर्डुला बाहर निकली। सफेद रंग का जमीन तक लसड़ाता फ्रॉक, सफेद पेन्सिल हील के जूते, जमनी रंग का ओवरकोट, जिसके खड़े कॉलर उस पर बेहद फब रहे थे। सबसे ज्यादे फब रहा था, उसके सफेद मोतयों का ताज़। नीचे वाले हॉल की तीन सीढियॉ रोबर्ट ने उसे न चढने दीं। वो उसे गोद मे उठा लिया। उन पर चावल फेंके जा रहे थे।
वस्तुनिष्ठ, ये जोड़ी भगवान ने इनके पैदा होते ही तय कर दी थी। न जाने मै इनके बीच क्या ढूँढ रहा था!
इनके हॉल के अन्दर जाते ही फ्राउएनहोफर की सारी भींड़ भी हॉल मे जा घुसी। मै धक्कम धुक्की के डर से बाहर सड़क पर ही खड़ा रहा। जब मै अन्दर आया तो देखा कि शादी का केक काटा जा चुका था, ग्लासों मे शैम्पेन ढाले जा चुके थे। नीचे वाले हॉल मे खाने पीने का इन्तजाम था और ऊपर वाले मे नाच गाने का। खाने पीने का कौन्ट्रेक्ट एक स्वीविख्ट नामके रेस्त्रॉ को दिया गया था। ये बर्लिन का एक चारसितारा होटल था। ऊपर वाले हॉल के एक कोने मे एक छ लोगों का आरकेस्ट्रा अपने साज सरंजाम ठीक किये जा रहा था। इन दोनो हॉलों को एक दुल्हन की तरह सजाया गया था। अन्दर घूसते ही एक बेयरा शैम्पेन के ग्लासों से भरा ट्रे थामे मेरी तरफ लपका। अपना ग्लास थामे मै ऊपर वाले हॉल की सीढ़ियों की तरफ बढा। मै अभीं पूरी सीढियॉ चढा भी न था कि कोर्डुला की नज़र मुझ पर पड़ी। मेरा नाम लेकर वो इतनी जोर से चिखी कि इन दोनो हालों मे एक पल के लिए तो सन्नाटा ही छा गया। वो रोबर्ट से अपना हॉथ छुड़वा कर भींड़ को चिरती मेरी ओर दौड़ी। मै तब तक अपना प्रेजेन्ट और ग्लास एक टेबल पर रख चुका था। आते ही वो मेरे बॉहों मे झूल गई। मेरी कमर थामे ही वो मुझे रोबर्ट से मिलवाई, अपने मॉ बाप से मिलवाया, रोबर्ट के मॉ बाप से मिलवाया। मै इस पार्टी मे आधे घन्टे से ज्यादे सिर्फ एक वजह से न रूकाः इस आधे घन्टे मे उसने रोबर्ट तक की सुधि न ली। एक ग्लास शैम्पेन पीकर, केक का एक टुकड़ा खा कर मै चलने को हुआ, तब इसका बड़ा विरोध हुआ, पर मेरे पास यूनिवर्सिटी का बहाना था। मुझे सड़क तक छोड़ने रोबर्ट भी कोर्डुला के साथ आया। इन दोनो को गले लगा कर इन्हे मैने अपनी शुभकामनायें कही, फिर तेज कदमों से मेट्रो की ओर बढ चला।
कोर्डुला की नौ महीनों की तबाहियों ने कम से कम उसके मॉ बाप को मिला दिया था जिसकी मुझे आज तक बहुत खुशी है।
शादी के बाद रोबर्ट और कोर्डुला बर्लिन मे ज्यादे लम्बा न रह पाए। रोबर्ट को म्यूनिख मे अपने ही कन्सर्न मे काम मिल गया था, जो बर्लिन के सिमेन्स से अच्छा था। कोर्डुला अपनी पढाई जारी न रख सकी। उसे बर्लिन छोड़ना पड़ा। बर्लिन छोड़ने से पहले उसका गर्भ ठहर गया था। म्यूनिख मे उसने एक बेटा जना। समवेत उसका नाम नील क्रिस्टोफ सोर्गे रखा गया।
जब नील तीन वर्ष का हुआ, तो वो रोबर्ट के साथ एक सप्ताह के लिए सपरिवार मुझसे मिलने बर्लिन आई और मेरे मकान मे ही ठहरी। रोबर्ट भी मुझसे काफी घूल मिल चुका था। नील का तो ये हाल था कि वो मेरे गोद से उतरने का नाम ही न लेता था। सारी गृहस्थी कोर्डुला के हॉथों मे होती थी। शाम का खाना हम इकट्ठे खाते थे। आठ बजे के आसपास कोर्डुला नील को सुलाने चली जाती थी। ड्राईन्गरूम मे वापस आने मे नौ तो बज ही जाते थे। फिर जमती थी हमारी बैठकी। मै ज्यादेतर उन्ही को सुनता था। कोर्डुला के पास मुझे नील के बारे मे सुनाने के लिए एक अनन्त इतिहास होता था।
कोर्डुला के कायाकल्प पर मुझे सहसा विश्वास न होता था। उसका वर्त्तमान और अतीत एक साथ मेरे ऑखो के सामने तिर जाता था। किस पर विश्वास करूँ और किस पर नही! मुझे समझ मे ही नही आता था।
इन्ही दिनो एक दिन शाम को उसने मुझसे कहा थाः मैने उन दिनो फ्राउएनहोफर मे तुमसे अपनी दूरी सिर्फ तुम्हे प्रोवोकेट करने के लिए रखी थी, पर तुम अपनी जगह से न हिले। मै दलदलों मे डूबती चली गई। तुम्हारे पास एक मोम की तरह दिल तो है, पर तुम्हारे पास एक बड़ा ही जिद्दी संस्कार है प्रमोद।
ःतुम्हारा अपना संस्कार भी कम जिद्दी नही है, वरना मै तुम्हे नही खोता।
देखते ही देखते उसके दोनो गाल रक्ताभ हो उठे थे।
ःतुमने हमारी शादी पर हमे एक किताब भेंट मे दी थी, जिसकी पहले पेज पर तुमने लिखा था कि तुम हमारे जीवन मे उस सितारे की तरह हो जिसे जब तब बादलों के द्वारा ढँक लिया जाएगा, पर तुम अपनी जगह पर डटे रहोगे और हमारे लिए सदा झिलमिलाते रहोगे। इतनी सुन्दर कविता हमने अपने जीवन मे कोई दूसरी न सुनी। कभीं म्यूनिख आओ हमसे मिलने। तुम्हे मेरी बिल्कुल याद नही आती!
ःआती है कोर्डुला। अक्सर तुम मुझे एक सपने की शक्ल मे दिखती हो। तुम्हे लपकने को बढता हूँ। या तो तुम पिघल कर गायब हो जाती हो या फिर लोप होती आकृतियों मे ढल जाती हो।
ःऔर तुम्हे!
ःअक्सर।
ःक्या याद करती हो तुम मेरे बारे मे!
ःसब कुछ। हर पल, हर क्षण जो मैने तुम्हारे संग बिताया। तुम नही जानते कि मुझे तुम्हे खो देने का कितना दुख है।
ःजाने दो इन बातों को। इमोशनल होने की उम्र तो हमारे पास है, पर अब तुम व्याहता हो। तुम्हारे पास नील है और रोबर्ट है। उसके भी आने का समय हो रहा है।
दूसरे दिन सुबह के नाश्ते के बाद ये म्यूनिख वापस चले गये। एक अजीब सा सूनापन मेरे मन और उसके इर्द गिर्द बिखर गया। अब पता नही इनसे कब मुलाकात होगी। मेरा म्यूनिख जाना न तो आने वाले दिनो मे सम्भव था और न ही आने वाले वर्षो मे। मै इनकी गृहस्थी मे झॉकना ही नही चाहता था।

फ्राउएनहोफर के हॉलों मे दुवारा किसी शादी की जोरदार पार्टी तो न मनाई गई. पर वहॅा की कई लड़कियों ने राजकुमारों का सपना त्याग कर. जिसे जो मिला. अपनाया और फ्राउएनहोफर को अल्विदा कहा।स्वयम बेटीना ने फोल्कर नामके एक अधेड़ तलाकसुदा को वरमाला पहनाई. जिसकी बेटी बेटीना के ही उम्र की थी।

कई वर्षो के बाद एक दिन फ्लो मार्कट मे मुझे रेजा दिखा।गर्मी के दिनों मे भी उसने एक गन्दा सा ओवरकोट पहन रखा था।उसकी दाढी छाती तक बढी हुई थी।फटे जूते. मुचड़ी सी कमीज और एक मुचड़ी सी ही बिना माप का पैंट. जिसकी जिप्प ऊपर तक खुली हुई थी।एक बसा बसाया परिवार न जाने कब का टूट चला था।

बड़ा ही वेगमय जीवन है जर्मनी का।यहॅा जिसने भी अपनी धूरी छोड़ी. उससे जग जहान तो छूटा ही. उसने अपने आप को भी खो दिया।

एक ही तो ईश्वर है यहॅा।वो हर रोज कितने टूटे खिलौनों को जोड़े!मुझे आज तक खुशी सिर्फ एक बात की है कि उसने कोर्डुला के लिए थोड़ा सा समय निकाला।इस टूटे खिलौने के दुवारा जुटने की कम से कम मुझे कोई भी आशा न दिखती थी।

प्रमोद कुमार सिंह